जल संचय

प्रभु ने जो उपहार दिए हैं इस धरती पर आये मनुष्यों को
इन सबमें जल सर्वश्रेष्ठ है जीवन धन में यही ज्येष्ठ है।
है नहीं जड़–चेतन इस जग में बिन जल जो जीवन जी पाए
जल से निर्जन में भी जीवन बिन जल जन, निर्जन हो जाए।
साठ फीसदी जल मानव तन वृक्षों में चालीस रहे यह
जगत वनस्पति जितनी महकी सबका कारण जल ही है यह।
जग में जितनी भी खुशहाली या वन–उपवन में हरियाली
उन सबको जल ही है देता जीवन में प्राणों की लाली।
जब इस जग में था न कहीं कुछ गैसों का गुब्बार महज था
प्रचंड धमाका हुआ अचानक चूर सकल गुब्बार, सहज था।
कई करोड़ों वर्षों तक फिर गैस खंड ब्रह्मांड में दमका
यह प्रक्रिया रूकी तब, जब तारक संग बनी नभगंगा।
इधर भूमि थी परत बनाती उधर पनपती ज्वालामुखियां
जल ने ले अस्तित्व, जगत की इसी समय खोली थीं अंखियां।
इस धरती पर जितना है जल कुछ हिम है, कुछ वाष्प और जल
कुछ जल पेय, अपेय बहुत जल सर्वाधिक है सागर का जल।
जहां कहीं भी हरियाले वन वहीं हो सके जल भी संचय
झड़ पत्तों से धरा सोखती करती भू–गत फिर, जल संचय।
गंदा जल, जिसमें मल जल भी बह–बहकर सागर में मिलता
सागर जल फिर दूषित होकर फैलाता बीमारी हर पल।
गंधक सोडियम, कैल्शियम, पोटेशियम, क्लोरीन, मैग्निशियम कार्बन
यह सब मिल दूषित करते हैं जल पीने वालों के तन–मन।
जल प्रदूषण, मूल दुखों का धरती पर है कहर बरसता
कहीं बाढ़, बीमारी आती, कहीं, बूंद हित जीव तरसता।
अगर बचाना है जीवन को करना होगा जल का संचय
तो फिर मानव कसो कमर अब, रोको इसका, अतिशय
अपव्यय।

दिनेश चमोला "शैलेश"
अभिव्यक्ति, 167 गढ़ विहार (IIP)
देहरादून–248005
फोन नः 0135–2660414
0135–2525871
chamolade@yahoo.com

जल ही जीवन है

पानी से पैदा हुए हैं, पौधे जन्तु हर प्राणी।
बिन पानी ही छाई है, हर ग्रह पर वीरानी।।
हरी–भरी धरती, कहती पानी की अजब कहानी।
बिन पानी हो जाती है, जीवन की खत्म कहानी।
सत्तानवे प्रतिशत पानी को, खारे सागर ने घेरा है।
बाकी बचे में अधिकांश का, ग्लेशियर रूप में डेरा है।।
कुछ मात्रा भूजल, नदी और तालाबों में थी जानी।।
बिन पानी.....
नदियों में जाता है पानी, ग्लेशियर की जुबानी।
इसी तरह से पृथ्वी पर, संतुलित रहता है पानी।।
बिन पानी.....
अमीबा, सीपी कितने जन्तु, पानी में ही रहते हैं।
जल से बने जन्तु और पौधे, युग्लीना ऐसा कहते हैं।
पानी में रहती है, मछली जल की रानी।।
बिन पानी.....
हो अगर कहीं तो यहीं है मुमकिन, जीवन की संभावनाएं।
फिर ढूंढते हैं आक्सीजन, और बाकी आवश्यक दशाएं।।
किसी ग्रह पर पानी, है जीवन की प्रथम निशानी।।
बिन पानी.....
नदियों में गन्दे नाले डाले, झीलों में कचरा डाला।
उद्योगों में भी पीने का पानी, इस्तेमाल कर डाला।।
जानबूझकर बर्बाद कर रहे, क्यों मूरख अज्ञानी।।
बिन पानी.....
न समझो नित संकुचित होते, जल भंडारों को अपार।
बढ़ती मांग फैलता प्रदूषण, संकट के आसार।।
पानी पर ही होगी, एक दिन दुनिया में खींचातानी।।
बिन पानी....

पवन कुमार "भारती"
चौहान भवन, विकास कालोनी, हरिद्वार